सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 18 • अंक 12 • 5 मार्च 2022 • मूल्य : 20 रु.

पूज्य गुरुदेव अवंती तीर्थोद्धारक,
खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभ-सूरीश्वरजी म.सा.
(फाल्गुन सुदि 14)
के जन्मदिवस पर
हार्दिक वंदनाए... वर्धापना...

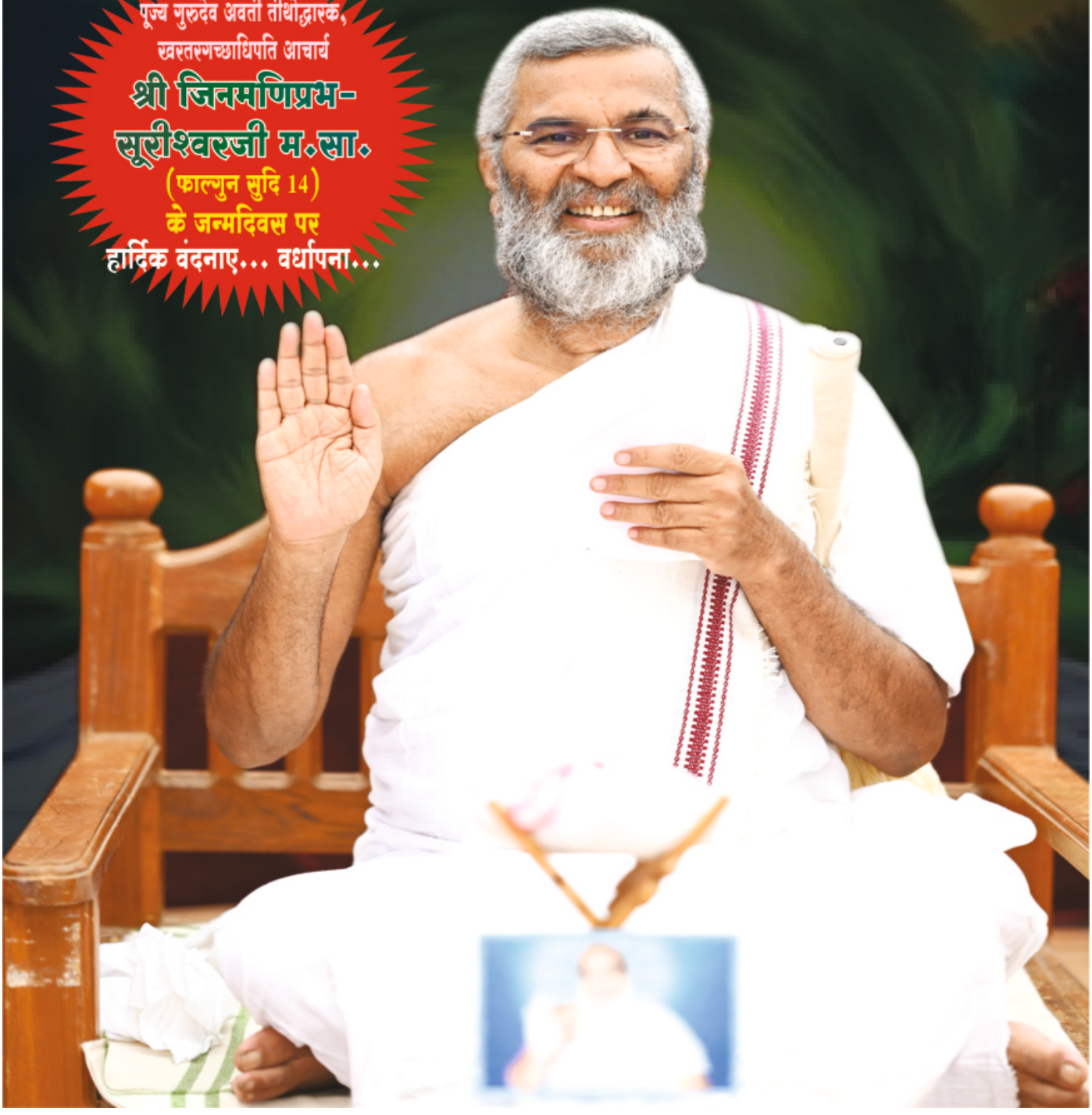

इन्दौर में दीक्षा महोत्सव संपन्न कृति कोठारी बनी कृतार्थप्रभाश्री

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

पंचिंदियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोभं च।
दुज्जयं चेव अप्पाणं सव्वमप्पे जिए जियं ॥

पाँच इन्द्रियाँ और क्रोध, मान, माया और लोभ दुर्जेय है। इस से भी अधिक दुर्जेय आत्मा है। आत्मा को जीत लेने पर ये सब जीत लिए जाते है।

It is difficult to conquer the five senses as well as anger, pride, delusion and greed. It is even more difficult to conquer the self. Those who have conquered the self have conquered everything.

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 18 अंक : 12 5 मार्च 2022 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :

डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	बैंगलोर-मणिधारी एनक्लेव-चामराजपेठ	05
3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	बैंगलोर-रांका पार्क अपार्टमेन्ट	05
4. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	बैंगलोर बोमसेन्द्रा	06
5. विहार डायरी	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	07
6. गोत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
7. प्रश्न अनेक जवाब एक	मुनि समयप्रभसागरजी म.	09
8. हमेशा सीखते रहो	प्रस्तुति : गौतम संकलेचा	11
9. खरतरगच्छ के साहित्यसर्जक श्रावकगण	अगरचन्द नाहटा	12
10. समाचार दर्शन	संकलित	14-29
11. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	30

विशेष दिवस

4 मार्च श्री अरनाथ च्यवन कल्याणक
6 मार्च श्री मल्लिनाथ च्यवन कल्याणक,
7 मार्च आचार्य श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरि जी म.सा. 60वीं पुण्यतिथि, बूढ़ा (म.प्र.)
9 मार्च चौमासी अठाई प्रारंभ
10 मार्च रोहिणी, श्री संभवनाथ च्यवन कल्याणक
13 मार्च पुष्य नक्षत्र प्रारम्भ रात्रि 08.05
14 मार्च पुष्य नक्षत्र समाप्त रात्रि 10.07, मीनार्क कुमुहूर्त्त प्रारंभ रात्रि 12.15 से
15 मार्च श्री मल्लिनाथ मोक्ष कल्याणक, श्री मुनिसुव्रतस्वामी दीक्षा कल्याणक
16 मार्च श्री सिद्धाचल जी की फाल्गुन फेरी
17 मार्च चौमासी प्रतिक्रमण
20 मार्च गुरु तारा उदय
21 मार्च श्री पार्श्वनाथ च्यवन एवं केवलज्ञान कल्याणक
22 मार्च श्री चन्द्रप्रभस्वामी च्यवन कल्याणक, बिछुड़ो प्रारंभ दोपहर 2.34
24 मार्च बिछुड़ो समाप्त शाम 5.31
25 मार्च वर्षीतप प्रारंभ, श्री आदिनाथ जन्म एवं दीक्षा कल्याणक
28 मार्च पंचक प्रारंभ रात्रि 11.56
29 मार्च चतुर्थ दादा श्री जिनचंद्रसूरि जन्मतिथि, खेतासर मेला
31 मार्च पाक्षिक प्रतिक्रमण
2 अप्रैल नूतन वर्ष विक्रम संवत् 2079 प्रारंभ
4 अप्रैल श्री कुंथुनाथ केवलज्ञान कल्याणक

विज्ञापन हेतु ट्रस्टी श्री गौतम बी. संकलेचा चेन्नई से संपर्क करावे मोबाइल नंबर 94440 45407

चातुर्मास हेतु नगर प्रवेश हो रहा था। स्वाभाविक रूप से बडी संख्या में लोग उपस्थित थे। मैं लोगों को देख रहा था।

बहुत से लोग आगे आने के लिये उतावले हो रहे थे। बहुत से लोग जुलूस के आगे चल रहे थे। कुछ लोग पीछे बातों में व्यस्त थे।

मेरी नजर एक व्यक्ति पर पडी। वह फोन पर बात कर रहा था। थोडा उदास था... आक्रोश में भी था। उसके अन्तर के भाव चेहरे पर पढे जा सकते थे।

तभी मैंने देखा- फोटोग्राफर फोटो खींचने की तैयारी कर रहा था। वह व्यक्ति भी उसके फोकस में शामिल था। बात करते-करते अचानक उसकी नजर फोटोग्राफर की ओर पडी।

उसने पाया कि मेरा फोटो खींचा जा रहा है। वह तैयार हो उठा। थोडा नजदीक आया। चेहरे के भाव ठीक किये। चेहरे पर हाथ फेरा, जैसे साफ कर रहा हो।

बालों को सही किया। होठों पर लम्बी मुस्कान के साथ हाथ जोडकर खडा हो गया।

उसका तात्कालिक यह परिवर्तन देखकर मैं चिंतन में उतर गया।

अचानक क्या हुआ! किस कारण यह बदलाव! सोचा तो पाया कि फोटो खिंचा जाना ही एकमात्र कारण था।

मेरा फोटो अच्छा आये, इस विचार से जब आक्रोश या उदासीनता को मुस्कुराहट में बदला जा सकता है। तब कर्मराज के द्वारा हमारा प्रतिपल फोटो खिंचा जा रहा है, क्या यह चिंतन हमारे हृदय को हर पल के लिये नहीं बदल सकते।

कर्मराज हर समय फोटो देख रहे हैं। यह चिंतन हमारी जीवन-दृष्टि को बदल सकता है।

ऐसा तभी संभव है, जब हर पल हमें यह स्मरण रहे। इस स्मरण की जागरुकता हमारे भविष्य को संवार सकती है।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 26

बैंगलोर - मणिधारी एनक्लेव-चामराजपेठ

–मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
– साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

बैंगलोर नगर में दादा गुरुदेव के भक्तों की संख्या में ज्यों ज्यों अभिवृद्धि होती जा रही है, त्यों त्यों दादा गुरुदेव की प्रतिमाऐं भी जगह जगह बिराजमान करके अपनी भक्ति और श्रद्धा को स्वर दे रहे हैं।

नगर के चामराज पेठ में एक विशाल कॉम्पलेक्स का निर्माण हुआ, जिसका नाम रखा गया- मणिधारी एनक्लेव!

दूसरे दादा मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के नाम से बने इस संकुल में एक गृह मंदिर का निर्माण किया गया। इस मंदिर में एक छतरी में मूलनायक के रूप में परमात्मा शांतिनाथ को बिराजमान किया गया।

एक तरफ अनंत लब्धिनिधान गुरु गौतम स्वामी को बिराजमान किया गया और दूसरी ओर महरौली के दादा मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि की आकर्षक प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई।

इन प्रतिमाओं की अंजनशलाका पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. के द्वारा हॉस्पेट नगर में संपन्न हुई थी। जबकि प्रतिष्ठा आचार्य श्री जिनोत्तमसूरि की निश्रा में वि. 2065 मिगसर वदि 3 ता. 15.11.2008 को संपन्न हुई।

पता : **श्री शांतिनाथ जैन श्वे. मंदिर**
नं. 262/263, प्रथम मुख्य मार्ग, चामराज पेठ, बैंगलोर (कर्णाटक)

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 27

बैंगलोर रांका पार्क अपार्टमेन्ट

बैंगलोर नगर में दादा गुरुदेव के भक्तों के निवास प्राय: हर कॉलोनी उपनगर में मिल जायेंगे। रांका पार्क एपार्टमेन्ट में शिखरबद्ध जिन मंदिर बना है। इसमें मूलनायक श्री सांचा सुमतिनाथ परमात्मा सद्बोध का वैभव वितरण करते नजर आ रहे हैं। परमात्मा की भव्य प्रतिमा मन मोह लेती है। बैंगलोर नगर में दादा गुरुदेव के भक्तों की संख्या में ज्यों ज्यों अभिवृद्धि होती जा रही है, त्यों त्यों दादा गुरुदेव की प्रतिमाऐं भी जगह जगह बिराजमान करके अपनी भक्ति और श्रद्धा को स्वर दे रहे हैं।

मंदिर के बाहर एक खुले रंगमंडप में एक तरफ गोखले बने हैं। एक भव्य देवकुलिका में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म.सा. की दिव्य प्रतिमा विशालता के साथ प्रतिष्ठित हैं।

जिसके दर्शन, पूजन करके दादा गुरुदेव के भक्त अपनी मनोकामना पूर्ण करते हैं।

इस मंदिर की प्रतिष्ठा आचार्य श्री जिनोत्तमसूरि के द्वारा वि. 2067 आषाढ सुदि 2 ता. 3 जुलाई 2011 को संपन्न हुई थी।

पता : **श्री सांचा सुमतिनाथ जैन श्वे. मंदिर**

रांका पार्क एपार्टमेंट, लालबाग रोड़, रिचमंड सर्कल, बैंगलोर-560 027 (कर्णाटक) फोन : 93422 78918

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 28

बैंगलोर-कृष्णगिरि मुख्य मार्ग पर बैंगलोर से लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर मलबरी सिल्क्स लि. के नाम से विशाल उद्योग है।

इसके मालिक बीकानेर निवासी श्री राजेन्द्रकुमारजी तिलोकचंदजी बोथरा परिवार है। इन्होंने शांतिनगर में श्री आदिनाथ परमात्मा का शिखरबद्ध भव्य जिन मंदिर एवं दादावाड़ी का स्वद्रव्य से निर्माण किया है।

श्री राजेन्द्रकुमारजी बोथरा के अन्तर् में यह भाव जगा कि अपनी फेक्टरी में भी परमात्मा का जिन मंदिर एवं दादावाडी का निर्माण लघु रूप में करना है।

दादा गुरुदेव और शिखरजी के भोमिया बाबा के परमभक्त श्री बोथराजी ने अपने विचार को क्रियान्वित करने के लिये प्रयास प्रारंभ किया।

योग वश श्री बोथराजी का स्वर्गवास हो गया। पीछे से उनके भ्राता एवं परिवार ने उनकी मनोकामना को स्वर देते हुए सामरण युक्त जिन मंदिर दादावाडी का निर्माण करवाया। फेक्टरी के प्रवेश द्वार के दायीं ओर खुले रंगमंडप सहित गर्भगृह का निर्माण करवा कर उसमें मूलनायक के रूप में सुमतिनाथ परमात्मा की प्रतिमाजी बिराजमान की। परमात्मा के दायीं ओर गौतमस्वामी एवं बायीं ओर दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की भव्य आकर्षक प्रतिमा प्रतिष्ठित की।

परमात्मा की गादी के नीचे भोमिया बाबा का बिंब बिराजमान किया। इस मंदिर की प्रतिष्ठा आचार्य जिनोत्तमसूरि द्वारा शुभ मुहूर्त में वि. सं. 2065 मिगसर वदि 11 ता. 23.11.2008 को करवाई गई। आसपास के काफी लोग इस मंदिर दादावाडी के दर्शन पूजन कर लाभ प्राप्त करते हैं।

पता :

श्री सुमतिनाथ जैन श्वे. मंदिर एवं दादावाडी

मलबरी सिल्क्स लि. 25 बोमसन्द्रा इण्डस्ट्रियल एरिया, तीसरा फेस, बैंगलोर- 560099 (फोन- 27831124)

126

विहार डायरी

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

चातुर्मास प्रारंभ हो गया था। काफी वर्षों बाद गच्छ के मुनिराजों का चातुर्मास हो रहा था। अत: गच्छानुयायियों में उत्साह, उल्लास का होना स्वाभाविक था। फिर चातुर्मास समिति बहुत ही सक्रिय थी।

प्रवेश के चार पांच दिन बाद ही श्री महावीर स्वामी जिन मंदिर, पायधुनी में माणिभद्र वीर की प्रतिमा की प्रतिष्ठा थी। मंदिर निर्माण के समय से ही यहाँ माणिभद्र देव की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। खंडित हो जाने के कारण नई प्रतिमा उसी स्थान पर बिराजमान की गई। यह प्रतिष्ठा 18 जुलाई 2003 को संपन्न हुई।

प्रश्न हो सकता है कि खरतरगच्छ की आम्नाय वाले मंदिर में माणिभद्र कैसे बिराजमान हुए! श्री महावीर स्वामी के मंदिर का निर्माण कोटा वाले बाफना परिवार द्वारा हुआ था। वे पूर्ण रूपेण खरतरगच्छ की सुविशुद्ध समाचारी का पालन करते थे। उन्होंने तपागच्छ के अधिष्ठायक देव माणिभद्र को क्यों प्रतिष्ठित किया! इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय माणिभद्र देव को किसी गच्छ विशेष के साथ जोडकर नहीं देखा जाता था। मध्य प्रदेश के प्राय: हर मंदिर में माणिभद्र वीर की प्रतिमा या उनका आकार प्रतिष्ठित मिलेगा। वह मंदिर खरतरगच्छ की परम्परा का हो या तपागच्छ की परम्परा का! यहाँ तक कि दिगम्बर परम्परा में भी माणिभद्र वीर की अपार मान्यता है। उनके मंदिरों में भी माणिभद्र को बिराजमान करने की परम्परा है।

ता. 24 जुलाई को श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर में नाकोडा भैरव की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई। वहाँ के ट्रस्ट मंडल में पाली निवासी श्री हस्तीमलजी कटारिया बहुत सक्रिय थे। वे यह अच्छी तरह मानते थे कि यह मंदिर खरतरगच्छ की परम्परा का है। अत: प्रतिष्ठा उन्हीं की परम्परानुसार होनी चाहिये।

इस बीच यह आवश्यकता अनुभव की गई कि चातुर्मास स्थल पर अस्थायी मंदिर का निर्माण होना चाहिये। मुंबई क्षेत्र में बारिश की संभावना अधिक रहती है। बारिश के कारण परमात्मा के दर्शन से हमें वंचित नहीं रहना पडे, इस कारण पालीताना से पार्श्वनाथ, आदिनाथ व वासुपूज्य प्रभु की प्रतिमाएं मंगवाई गईं। जिनहरि विहार में मौजूद थी। साथ ही दादा गुरुदेव जिनकुशलसूरि व नाकोडा भैरव की प्रतिमा भी मंगवाई गई। पांचों ही प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा 20 जुलाई को संपन्न की गई। प्रवचन हॉल के विशाल मंच पर ही एक देवकुलिका में प्रभु को बिराजमान किया गया।

प्रवचनों में उपस्थिति लगातार बढ़ती जा रही थी। दोपहर में महावीर स्वामी मंदिर में बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभा का प्रवचन होता।

तपस्या का जोरदार वातावरण बना हुआ था। विशेष रूप से सिद्धि तप की साधना साध्वीजी म. व श्रावक श्राविकाओं में बडी संख्या में चल रही थी।

चातुर्मास प्रारंभ होते ही पूज्यश्री ने प्रवचनों, वार्तालाप आदि में गच्छ की एकता व संगठन पर जोर दिया। पूर्व में गच्छ के आगेवानों की बैठक में यह निर्णय किया गया था कि संघ का गठन किया जावे। एक विशाल अधिवेशन आहूत हो। गच्छ के अनुयायी मुंबई बृहत् क्षेत्र में जहाँ पर भी रहते हों, सभी को संपर्क कर सदस्य बनाया जावे। इसके लिये 5 सदस्यों की एक समिति का गठन किया गया।

दि. 10 अगस्त 2003 को विशाल अधिवेशन का

(शेष पृष्ठ 8 पर)

गोत्र इतिहास
35

कठोतिया गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

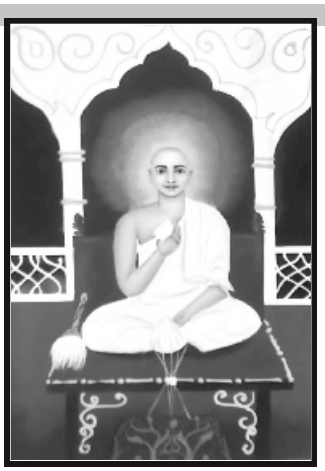

प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि विहार करते हुए वि. सं. 1176 में मरुदेश के जायल नगर के पास बसे कठोती गांव में पधारे थे। वहाँ एक अजमेरा ब्राह्मण रहता था। वह भगन्दर रोग का शिकार था।

उसने जब गुरुदेव की महिमा सुनने के साथ यह जाना कि वे हमारे गांव में पधारे हैं तो प्रसन्नता से परिपूर्ण आशान्वित होता हुआ उनकी सेवा में पहुँचा। पीडा भरे स्वरों में अपनी बीमारी का वर्णन गुरुदेव के सामने किया। उसने प्रार्थना की- हे भगवन्! मैं इस रोग से परेशान हो गया हूँ। वैद्यराजों द्वारा दी गई कोई भी औषधि कारगर साबित नहीं हुई है। अब आपकी ही शरण है। आप इसे दूर करें।

गुरुदेव ने उस पर वासचूर्ण डाला। यह गुरुदेव की साधना का परिणाम था कि उसका रोग जड से नष्ट हो गया। वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया।

वह कृतज्ञ हो गुरुदेव का परम भक्त बन गया। वह प्रतिदिन गुरुदेव के प्रवचन जिनवाणी श्रवण करने उपाश्रय आने लगा। वह गुरुदेव के प्रवचनों से प्रभावित हुआ। जिनवाणी को सुनकर अपने आपको धन्य समझने लगा।

उसने गुरुदेव से जैन धर्म में दीक्षित करने की प्रार्थना की। गुरुदेव ने उसे सम्यक्त्व का स्वरूप समझाते हुए जैन धर्म में दीक्षित किया। उसके सिर पर वासक्षेप डालते हुए श्रावकत्व प्रदान किया। ओसवाल जाति में सम्मिलित करते हुए कठोती गांव के नाम से कठोतिया गोत्र प्रदान किया।

ऐसा भी उल्लेख मिलता है कि यह परिवार मूलत: सोनी था। दादा गुरुदेव के उपदेशों से जैन धर्म अंगीकार किया। बाद में वे कठोती गांव में आकर रहने लगे। वहाँ से दूसरे गांव में गये तब कठोती से आने के कारण कठोतिया कहलाने लगे।

(शेष पृष्ठ 7 का)

विहार डायरी

आयोजन हुआ। इस अधिवेशन में हजार से अधिक श्रावकों की उपस्थिति रही। सभी उत्साहित थे। अधिवेशन की अध्यक्षता चातुर्मास समिति के अधयक्ष श्री मंगलप्रभातजी लोढा ने की थी। दो घंटे तक चले इस सम्मेलन में मैंने व बहिन विद्युत्प्रभा ने गच्छ के इतिहास को विस्तार से समझाते हुए संगठन पर बल दिया।

उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री राजनजी कोचर, श्री मंगलप्रभातजी ने संगठन पर जोर देते हुए अपना उद्बोधन दिया था।

अन्त में श्री मंगलप्रभातजी लोढा ने 'श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुंबई' की स्थापना करने का प्रस्ताव रखा, इस प्रस्ताव का उपस्थित सभी सदस्यों ने अपना हाथ उठाकर जय-जयकार करते हुए पूर्ण समर्थन किया।

इस प्रकार मुंबई में खरतरगच्छ संघ की स्थापना हुई। यह संघ लगातार प्रगति कर रहा है। प्राय: हर वर्ष साधु साध्वीजी म. का चातुर्मास होता है। गच्छ का एक भवन निर्मित हो गया।

इस संघ के गठन से गच्छ को एक स्थिरता प्राप्त हुई। गच्छानुयायी जो इतर समुदायों में अपनी आराधना करने लगे थे। वे पुन: अपने उपकारी वातावरण को प्राप्त हो गये।

कहानी
3

प्रश्न अनेक जवाब एक

—मुनि समयप्रभसागरजी म.

(गतांक से आगे)

मन ही से आवाज आई कि अब शोक करने से क्या लाभ मेरे बिना मेरे इस कृत्य को कोई नहीं जानता है? यह भी तो मुझे नहीं पहचानता और पहचान भी लेगा तो इस मूर्ख की बात पर कोई विश्वास नहीं करेगा। इस प्रकार का विचार कर विवाह सामग्री को वहीं पास में कहीं छिपा कर अपने स्वस्थान लौट गई। प्रातव्यर्थिक फिर अकेला रह गया।

प्रातव्यमर्थिक विचार करने लगा कि दो कौतुक तो देख चुका हुँ अभी रात काफी बाकी है। नींद तो आ नहीं रही है। थोड़ा और घूम लेता हूँ जिससे बाद में आराम से सो जाऊँ। ऐसा विचार कर मन्दिर से निकल कर एक चौराहे पर पहुँच गया। वहाँ पहुँचने पर उसने एक बारात जाते हुए देखी। दुल्हा घोड़ी पर सवार था। आगे पीछे दाएं-बाएं लोगों से घिरे दुल्हे को देख वह भी बारात के साथ चल पड़ा।

वसुपति नाम के श्रेष्ठी के पुत्र जिनदत्त की यह बारात थी। वसुपति श्रेष्ठी ने अपने परिजनों रिश्तेदारों के अतिरिक्त दोस्तों को भी आमन्त्रित किया था। बहुत उत्साह से अनेक तरह के वाजिन्त्र वादनों के साथ आडम्बर पूर्वक बारात निकली थी। सभी अपनी मस्ती में चल रहे थे। यह बारात इसी नगर के श्रेष्ठी वसुदत्त के घर जा रही थी। वसुदत्त श्रेष्ठी की पुत्री का नाम वसुमति था। दोनों श्रेष्ठियों ने बहुत विचार पूर्वक पुत्र-पुत्री के विवाह सम्बन्ध तय किए थे। दोनों तरफ उत्साह का वातावरण था। जिनदत्त का वसुमति के साथ पाणिग्रहण तय हुआ था। शुक्ल त्रयोदशी के शुभ मुर्हूत में शादी का आयोजन तया किया गया था। बारात वसुदत्त के घर के सामने पहुँची ही थी कि खुशनुमा माहौल में भगदड़ मचने लगी।

राज की हस्तीशाला के पास से गुजर कर आती हुई बारात में बजने वाले वाजिन्त्रों की आवाज को सुनकर एक हाथी उन्मत हो गया। उन्मत्र होने पर जिस स्तम्भ से बंधा हुआ था उसको उखाड़कर वह हस्तीशाला से बाहर आ गया। वांजिन्त्रों के आवाज की दिशा में तेजगति से दौड़ने लगा। उस मार्ग में दुकानों के आगे-रखी हुई वस्तुओं को वह सड़क के किनारे पर लगें.....? उक्षाड़ता हुआ रौद्ररूपधारण किया वसुदत्त के घर के आगे पहुँच गया। बज रहे वांजिव व उसकी उम्नतता में वृद्धि कर रहे थे। जब लोगों की नजर हाथी पर पड़ी तो भयभीत होकर अपनी जान बचाने के लिए इधर उधर भागते लगे। थोड़ी ही देर में त्राहि माम्-त्राहि माम् का वातावरण बन गया। हाथी चंवरी की दिशा में आगे बढ़ने लगा था। चंवरी की तरफ हाथी के आगे बढ़ते देख दुल्हे सहित दूसरे लोग भी दुल्हन को अकेली छोड़ भाग गए। पास ही मंगल गान गाने वाली महिलाएं भी भाग गई। दुल्हन नितान्त अकेली रह गई। प्रातव्यमर्थिक यह सारा दृश्यकर दयाद्र हो उठा और सोचने लगा-....! इस कन्या की मौत हो जाएगी। यह उम्मत्त हाथी उसी तरफ बढ़ रहा है। मुझे कैसे भी करके इस कन्या को बचाना चाहिये। उसने अपनी दृष्टि इधर-उधर दौड़ाई और उसे एक लटठ दिखा तो वह बिजली सी स्फूर्ति से लट्ठ के पास पहुँच कर उठाया और आव देखा न ताव हाथी के मर्मस्थल पर वार कर दिया। हाथी इस प्रकार हुए अकल्पित आक्रमण से लक्ष भ्रमित हो गया। प्रात्तव्यमर्थिक ने हाथी की उस भ्रमित दशा का लाभ उठाकर उसे येन-केन प्रकारेण ज्यादा घूमा-घूमाकर अपनी जान की बाजी लगाकर उस पर सवार होकर उसे वश में कर लिया। आरक्ष को के हवाले कर दिया। थोड़ी ही देर में वातावरण सामान्य हो गया। वधुपक्ष और वरपक्ष वाले दोनों चंवरी मण्डप में आ गए।

तभी चंवरी मण्डप में बैठी हुई वसुमति बोली आप सभी मेरी बात ध्यान से सुनले। जिसने मेरे लिए अपने प्राणों को खतरे में डालकर मेरी रक्षा की। मैं उसे ही जीवन साथी के रूप में स्वीकार करती हूँ अन्य किसी को भी वरने की मेरी इच्छा नहीं है। मेरा यह निर्णय प्राणान्तक अडिग समझे। इतना सुनकर वर और वधू पक्ष दोनों में एक बार तो खामोशी छा गई। इस खामोशी को भेदते हुए वर पक्ष के कुछ लोग खड़े हो गए और एक ने आगे आते हुए कह-हमारा वर मण्डप में

आकर चंवरी चढ़ा है और हम यहाँ से वर का इसी वधू से विवाह करके जायेंगे। जिसको कन्या दी गई है उसी को देनी होगी अन्य किसी को नहीं। तभी वधू पक्ष में से एक व्यक्ति आगे आकर बोला कन्या जिसको चाहेगी वही वह होगा अन्य नहीं।

इस प्रकार दोनों पक्षों में कहा सुनी बढ़ते बढ़ते उग्रता का रूप धारण करने लगी और दोनों पक्षों में हाथा-पाई होनी शुरू हो गई। कुछ व्यक्तियों ने महयस्थता करने का प्रयास भी किया। जैसे-तैसे कर रात गुजर गई। प्रात: होते ही दोनों पक्षों के लोग राजा के दरबार में अपनी-अपनी फरियाद लेकर पहुँच गए। दोनों पक्षों के लोगों के साथ-प्रातव्यमर्थिक भी कौतुक देखने राजदरबार पहुँच गया था।

राजदरबार लगा। राजसभा में आए सभी ने राजा का स्वागत किया। राजा अपने सिंहासन पर विराजमान हुए और उनकी कलह का कारण जाना चाहा। तब पहले वर पक्ष ने अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए कहा-हे राजन्! श्रेष्ठी वसुदत्त ने अपनी पुत्री व सुमति का विवाह श्रेष्ठी वसुपति के पुत्र जिनदत्त के साथ करना तय किया था। तय मुर्हुत के मुताबिक हम सब बारात लेकर इनके यहाँ पहुँचे। अब वधु पक्ष इसके साथ शादी करने से इन्कार कर रहा हैं। यह सरासर गलत हैं। अब राजा ने वधु पक्ष से अपना पक्ष रखने को कहा- तो वधू पक्ष ने अपना पक्ष बहुत संक्षेप में रखते हुए कहा कन्या की इच्छा इस लड़के के साथ विवाह करने की नहीं है। इसलिए हम इन्कार कर रहे हैं। तब राजा ने फिर प्रश्न किया ऐसा करने का क्या कारण है? तब वे बोले यह तो कन्या से ही पूछा जाय।

तब राजा ने कन्या से प्रश्न किया-तुम इस लड़के के साथ शादी तय होने पर अब इन्कार क्यों कर रही हो? तब वसुमति ने कहा-राजन्। मेरी बात आप ध्यान पूर्व सुनिये-यह बात सही है कि जिसके साथ मेरी शादी तय हुई थी मैं उसके साथ शादी करने से इंकारकर अपने प्राणों के रक्षक के साथ मैंने शादी करने का निर्णय किया। घटना आज ही रात्रि में घटित हुई है। जब ये लोग बारात लेकर हमारे यहाँ पहुँचे और मैं भी दुल्हन का वेश धारण कर चँवरी मण्डप में पहुँची। वाजित्रों की आवाज से प्रस्त्र होकर आपकी हस्तीशाला से एक हाथी उन्मत्र होकर विनाश लीला करता हुआ चंवरी मण्डप की तरफ आने लगा। हाथी को चंवरी मण्डप की तरफ बढ़ते देखकर सभी अपी जान बचाने वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गए। तब यह वर भी मुझे साक्षात् मृत्यु के मुख में जाने के लिए एकाकी छोड़कर भाग गया। तब मेरे प्राणों की रक्षा के लिए इस युवक प्रातव्यमर्थिक ने अपने प्राणों को जोखिम में डालकर मेरी प्राण रक्षा की। तब मैंने सोचा जो व्यक्ति विवाह मण्डप में ही मुझे कष्टों के बीच इस प्रकार अकेली छोड़कर भाग गया है तो आगे उसका मेरे पर क्या प्रेम भाव होगा? भविष्य में किसी भी प्रकार का संकट आने पर यह मेरी रक्षा कैसे करेगा? मेरे जान की मेरी शील की जो जरूरत के समय रक्षा नहीं करेगा तो मैं इसके साथ जीवन जीने का खतरा जानबूझकर क्यू लूँ। ऐसा सोचकर मैंने जीवन की सुरक्षा करने वाले को अपना जीवन साथी बनाने का फैसला कर लिया। मेरे ख्याल से मैने अनुचित कार्य नहीं किया है।

तब राजा ने उससे दूसरा प्रश्न किया-इस ..... और बुद्धिमान युवक को छोड़कर तुमने अज्ञात गोत्र और भिक्षाचय के द्वारा अपना भरण-पोषण करने वाले को क्यों वरण करना चाहती हो? तब कन्या ने उत्तर दिया-जिसने अभी अपनी जान हथेली पर रखकर मेरी इस संकट से रक्षा की है। इसलिए भविष्य में यह मेरी रक्षा करेगा। इसके साथ अभंग प्रीति भविष्य में भी होगी। ऐसा सोचकर मैंने यह निर्णय लिया है। रही इसके अज्ञात कुल और गोत्र की बात-तो इसका कुल और गोत्र मैंने इसके अद्‌भुत शौर्य और गम्भीरता आदि गुणों द्वारा जान लिया है। इसलिए इस गुणवान से ही मैं शादी करूंगी। राजा वसुमति की स्पष्टवादितां और सत्य बात को सुनकर प्रसन्न हुआ। इसके चातुर्य से विस्मित राजा ने विस्मित होते हुए मातव्यमर्थिक से प्रश्न करते हुए पूछा तुम्हारा कुल और गोत्र क्या है? उसने गाठ स्वर से उतर दिया 'प्रातव्यमर्थ लभते मनुष्य' वही बैठ हुई राजकुमारी ने त्रेलौक्यसुन्दरी भी यह बात सुन रही थी। बात पूरी सुनने के बाद उसने सोचा-एक यह है जो पहले से तय बड़े कुल में जन्में ऐसे वर को छोड़कर गुणों से ज्ञात कुल ओर गोत्र को महत्व देकर प्रातव्यमर्थिक का वरण कर रही है। और दूसरी तरफ मुझ अभागिन द्वारा इस सत्पुरूष से शादी करके भी मेरे द्वारा इसका त्याग किया गया है। अभी भी मौका हाथ में है और मैं अपने गलत फैसले को सही कर लूँ ऐसा विचार कर उसने भी प्रातव्यमर्थिक को अपना वर सतय किया और उच्च स्वर में बोली-'दैवो न लल्लंघयितुं समर्थ: अर्थात् भाग्य भी जिसका उल्लंघन करने में समर्थ नहीं है।

(क्रमश:)

प्रेरक कथा

हमेशा सीखते रहो

प्रस्तुति : गौतम संकलेचा

एक बार गाँव के दो व्यक्तियों ने शहर जाकर पैसे कमाने का निर्णय लिया। शहर जाकर कुछ महीने इधर-उधर छोटा-मोटा काम कर दोनों ने कुछ पैसे जमा किये। फिर उन पैसों से अपना-अपना व्यवसाय प्रारंभ किया। दोनों का व्यवसाय चल पड़ा। दो साल में ही दोनों ने अच्छी खासी तरक्की कर ली। व्यवसाय को फलता-फूलता देख पहले व्यक्ति ने सोचा कि अब तो मेरा काम चल पड़ा है। अब तो मैं तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ता चला जाऊंगा। लेकिन उसकी सोच के विपरीत व्यापारिक उतार-चढ़ाव के कारण उसे उस साल अत्यधिक घाटा हो गया।

आओ सीखें-

हारता वो है, जो शिकायतें बार बार करता हैं
और
जीतता वो है, जो कोशिशें हजार बार करता हैं।

अब तक आसमान में उड़ रहा वह व्यक्ति यथार्थ के धरातल पर आ गिरा। वह उन कारणों को तलाशने लगा, जिनकी वजह से उसका व्यापार बाजार की मार नहीं सह पाया। सबने पहले उसने उस दूसरे व्यक्ति के व्यवसाय की स्थिति का पता लगाया, जिसने उसके साथ ही व्यापार आरंभ किया था। वह यह जानकर हैरान रह गया कि इस उतार-चढ़ाव और मंदी के दौर में भी उसका व्यवसाय मुनाफे में है। उसने तुरंत उसके पास जाकर इसका कारण जानने का निर्णय लिया। अगले ही दिन वह दूसरे व्यक्ति के पास पहुँचा।

दूसरे व्यक्ति ने उसका खूब आदर-सत्कार किया और उसके आने का कारण पूछा। तब पहला व्यक्ति बोला- "दोस्त! इस वर्ष मेरा व्यवसाय बाजार की मार नहीं झेल पाया। बहुत घाटा झेलना पड़ा। तुम भी तो इसी व्यवसाय में हो। तुमने ऐसा क्या किया कि इस उतार-चढ़ाव के दौर में भी तुमने मुनाफा कमाया?" यह बात सुन दूसरा व्यक्ति बोला- "भाई! मैं तो बस सीखता जा रहा हूँ, अपनी गलती से भी और साथ ही दूसरों की गलतियों से भी। जो समस्या सामने आती है, उसमें से भी सीख लेता हूँ। इसलिए जब दोबारा वैसी समस्या सामने आती है। तो उसका सामना अच्छे से कर पाता हूँ और उसके कारण मुझे नुकसान नहीं उठाना पड़ता। बस ये सीखने की प्रवृत्ति ही है, जो मुझे जीवन में आगे बढ़ाती जा रही है।"

दूसरे व्यक्ति की बात सुनकर पहले व्यक्ति को अपनी भूल का अहसास हुआ। सफलता के मद में वो अति-आत्मविश्वास से भर उठा था और सीखना छोड़ दिया था। वह यह प्रण कर वापस लौटा कि कभी सीखना नहीं छोड़ेगा। उसके बाद उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ता चला गया।

शिक्षा- प्रिय मित्रों! जीवन में कामयाब होना है तो इसे पाठशाला मानकर हर पल सीखते रहिये। यहाँ नित नए परिवर्तन और नए विकास होते रहते हैं। यदि हम स्वयं को सर्व-ज्ञाता समझने की भूल करेंगे तो जीवन की दौड़ में पिछड़ जायेंगे। क्योंकि इस दौड़ में जीतता वही है, जो लगातार दौड़ता रहता है। जिसने दौड़ना छोड़ दिया, उसकी हार निश्चित है। इसलिए सीखने की ललक खुद में बनाये रखें, फिर कोई बदलाव, कोई उतार-चढ़ाव आपको आगे बढ़ने से नहीं रोक सकता।

भव्य इतिहास

खरतरगच्छ के साहित्यसर्जक श्रावकगण

लेखक–अगरचन्द नाहटा

(दिसंबर अंक से जारी...)

सतरहवीं शताब्दी के अंत में लखपत नामक खरतरगच्छ के एक श्रावक कवि हुए हैं जो सिन्धु देश के सामुही नगर के कूकड़ चोपड़ा तेजसी के पुत्र थे। इनकी प्रथम रचना तिलोयसुंदरी मंगलकलश चौपाई सं० १६६१ के आ० सु० ७ थट्टानगर में बुहरा अमरसी के कथन से रचित है। १२ पत्रों की प्रति का केवल अंतिम पत्र ही तपागच्छ भंडार जेसलमेर में हमारे अवलोकन में आया था। कवि की दूसरी रचना मृगांकलेखा रास सं १६६४ श्रा० सु. १५बुधवार को जिनराजसूरि–जिनसागरसूरि के समय में रची गई। २५पत्रों के अन्तिम २ पत्र ही तपागच्छ भंडार जेसलमेर में हमारे देखने में आये।

१८वीं शताब्दी में कवि उदयचन्द मथेन बीकानेर में हुए, जो महाराजा अनूपसिंह से आदर प्राप्त थे। अनूपसिंह के नाम से इन्होंने हिन्दी में अनूप शृंगार नामक ग्रन्थ सं० १७२८ में बनाया, जिसकी एक मात्र प्रति अनुप संस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर में है इसकी (**कीसकी**)रचना सं० १७६५में हुई। उदयचन्द मथेन का तीसरा ग्रन्थ पांडित्य–दर्पण प्राप्त है।

मलूकचन्द रचित पारसी वैद्यक ग्रन्थ तिव्वसहावी का हिन्दी पद्यानुवाद 'वैद्य हुलास' नाम से प्राप्त है। कवि ने अपना विशेष परिचय या रचनाकालादि नहीं दिए पर इसकी कई हस्तलिखित प्रतियां खरतरगच्छ के ज्ञानभंडारों में देखने में आई अत: इसके खरतरगच्छीय होने की संभावना है।

१९वीं शताब्दी में अजीमगंज–मकसूदावाद के श्रावक सबलसिंघ अच्छे कवि हुए जिन्होंने सं. १८६१ में चौबीस जिन स्तवनों और विहरमान बीसी की रचना की। इन्होंने अपनी रचना में श्री जिनहर्षसूरि के प्रसाद से रचे जाने का उल्लेख किया है।

२०वीं शताब्दी में नाथनगर में श्री अमरचन्द जी बोथरा खरतरगच्छ के कट्टर अनुयायी और सुकवि थे। इनके रचित दो चौबीसियां प्रकाशित हो चुकी है। ये पहले तेरापंथी थे श्री जिनयश:सूरिजी महाराज के अजीमगंज पधारने पर अनेक वादविवाद के पश्चात् ये खरतरगच्छानुयायी मन्दिर–मार्गी बने। खरतरगच्छ की आचरणाओं आदि के विषय में आपका गहरा अध्ययन व चिन्तन था। श्रीमद् देवचन्द्रजी की रचनाएं आपको अत्यन्त प्रिय थी।

उपर्युक्त खरतरगच्छ के श्रावक कवियों के अतिरिक्त कतिपय छोटे मोटे और भी अनेक कवि हुए हैं जिनकी जिनभद्रसूरि गीत आदि रचनाएं हमारे अवलोकन में आई है। खोज करने पर और कई खरतरगच्छीय कवियों की रचनाएं प्राप्त होगी। बीसवीं शताब्दी में तो हिन्दी गद्य–पद्य लेखक, कई कवि हो गए हैं जिनमें से राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। खरतरगच्छीय यति रायचन्दजी ने इनके खानदान के राजा डालचन्द के लिये सं० १८३८ में कल्पसूत्र का पद्यानुवाद किया था। उन्होंने विचित्र मालिका और अवयदी शकुनावली की रचना की। राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' के बहुत से ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं उनकी दादी रत्नकुंवरि बीबी लखनऊ के राजा वच्छराज नाहटा की पुत्री थी। उसने सं० १८४४ में माघ बदि ५को प्रेमरत्न नामक हिन्दी काव्य बनाया। कवियित्री रत्नकुंवरि बहुत बड़ी पंडिता थी और उसका झुकाव कृष्ण–भक्ति को ओर दिखाई देता है। राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद की लड़की गोमती बीबी जैनधर्म की अच्छी जानकार थी। यह खानदान खरतरगच्छीय हैं।

स्वयं ग्रन्थ रचना करने के अतिरिक्त खरतरगच्छ के

बहुत से श्रावकों ने विद्वान यति-मुनियों से अनुरोध कर अनेकों रचनाएं करवायी थी। उन सबका विवरण देखने से खरतरगच्छीय श्रावकों के साहित्य प्रेम का अच्छा परिचय मिल जाता है।

ज्ञानभंडारों की स्थापना और अभिवृद्धि में तो श्रावक समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हजारों प्रतियां उन्होंने प्रचुर द्रव्य व्यय कर लिखवायीं। कविजनों को समय-समय पर पुरस्कार आदि देकर प्रोत्साहित किया। कई श्रावक अच्छे विद्वान थे, पर साहित्य निर्माण का उन्हें सुयोग प्राप्त नहीं हुआ। विद्वानों का सत्संग, स्वाध्याय प्रेम उन्हें बहुत रुचिकर रहा है। समय-समय पर विद्वान मुनियों से उन्होंने गम्भीर विषयों पर प्रश्न उपस्थित कर उनसे समाधान किया जिसका उल्लेख कई प्रश्नोत्तर ग्रन्थों में पाया जाता है।

खरतरगच्छ की कई संस्थाओं ने विद्वान बनाने की योजना बनाई थी पर खेद है कि वह योजना सफल नहीं हो पायी। आज भी इस बात की बड़ी आवश्यकता प्रतीत होती है कि उचित व्यवस्था करके उच्चस्तरीय अध्ययन कर जिज्ञासु विद्यार्थियों को विद्वान बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया जाय। खरतरगच्छ के साहित्य के संपादन, प्रकाशन, नवीन साहित्य निर्माण में विद्वान श्रावकों की अत्यन्त आवश्यकता है।

(संपूर्ण)

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगछ पेढ़ी की बैठक संपन्न

इन्दौर 22 फरवरी। श्री जिनदत्त--कुशलसूरि खरतरगछ पेढ़ी की कार्यकारिणी की बैठक पू. गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के सानिध्य में महावीर बाग, इंदौर में 22 फरवरी 2022 को संपन्न हुई। सभा में संरक्षक श्री मोहनचंदजी ढढा एवं अध्यक्ष श्री तेजराजजी गोलेछा सहित देश के विभिन्न राज्यों के सदस्यों को उपस्थिति रही।

बैठक में 2020/21 के लेखा-जोखा को पारित किया गया। विक्रमपुर, खेतासर एवं पाटन के परिसरों के संचालन की समीक्षा की गई। पाटन में हाल ही में खरीदी जमीन के विकास हेतु विचार विमर्श किया गया।

पूर्व में घोषित साधु-साध्वियों के वैयावच्च हेतु योजना को क्रियान्वित करने का निर्णय लिया गया। इस योजना के अंतर्गत खरतरगछ के सभी साधु-साध्वियों के विहार एवं वैयावच हेतु आवश्यक खर्च एवं सहायकों की तनख्वाह आदि का भुगतान पेढ़ी द्वारा किया जायेगा। इस योजना का संचालन पेढ़ी के अहमदाबाद ऑफिस द्वारा स्थानीय संघ, केयुप एवं केएमपी के सहयोग से किया जायेगा।

पेढ़ी के कार्यों की निरंतर सूचना सदस्यों एवं जन साधारण तक पहुंचाने हेतु एक नियमित बुलेटिन निकालने का निर्णय लिया गया।

-पदम कुमार टाटिया

इंदौर में चल रहे भव्य दीक्षा महोत्सव में राज्यसभा सांसद एवं पूर्व रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभुजी महावीर बाग दादाबाड़ी पधारे एवं परम पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवंती तीर्थोद्धारक श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. का आशीर्वाद प्राप्त किया एवं मुमुक्षु बहन कु. कृति कोठारी के उज्ज्वल संयम जीवन की शुभकामनाऐं दी।

इन्दौर नगर में दीक्षा महोत्सव संपन्न

इन्दौर 21 फरवरी। परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न पूज्य गुरुदेव अर्वांति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. पूज्य स्थविर मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पूज्य गणिवर्य श्री मनीषप्रभसागरजी म. पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मंथनप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मतीशप्रभसागरजी म. ठाणा 6 एवं पूजनीया प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री विमलयशाश्रीजी म. पू. जिनाज्ञाश्रीजी म. ठाणा 2 तथा पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री विरलप्रभाश्रीजी म. पू. विपुलप्रभाश्रीजी म. आदि की पावन निश्रा में इन्दौर जानकीनगर निवासी सुश्री कृति चौरडिया कोठारी की भागवती दीक्षा फाल्गुन वदि 5 सोमवार ता. 21 फरवरी 2022 को अत्यन्त आनंद हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

इस अवसर पर तपागच्छीय आचार्य प्रवर श्री दिव्यानंदसूरिजी म. (निराले बाबा) आदि ठाणा तथा सागर समुदाय के पू. साध्वी श्री अर्चपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन सानिध्यता प्राप्त हुई।

दीक्षा महोत्सव के उपलक्ष्य में पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री सुदीर्घ विहार कर ता. 17 फरवरी 2022 को इन्दौर जानकीनगर पधारे। जहाँ दीक्षार्थी परिवार के गृहांगण से प्रवेश शोभायात्रा प्रारंभ हुई। मंगल प्रवचन हुआ। साथ ही पूजा पढाई गई।

ता. 18 फरवरी को 108 पार्श्वनाथ महापूजन का आयोजन हुआ। ता. 19 फरवरी को जानकीनगर में दीक्षार्थी के वर्षीदान का भव्य वरघोडा जानकीनगर संघ की ओर से आयोजित किया गया। श्रीसंघ का स्वामिवात्सल्य किया गया।

ता. 20 फरवरी को महावीर बाग से भव्य वरघोडा आयोजित किया गया। रात्रि में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। विदाई समारोह का संचालन भाविक मेहता ने किया तथा संगीत तथा संयमी गीतों की प्रस्तुति गौतम वारिया ने दी।

ता. 21 फरवरी को प्रातः शुभ मुहूर्त्त में दीक्षा समारोह प्रारंभ हुआ। परिवारजनों ने चतुर्विध श्री संघ की साक्षी से गुरु महाराज से कुमारी कृति को दीक्षा प्रदान करने की विनंती की। मोकलसर निवासी संघवी श्री तेजराजजी पुखराजजी गुलेच्छा ने विजय तिलक करने का लाभ लिया। रजोहरण ग्रहण करने से पूर्व दीक्षार्थी कृति कुमारी ने जब अपने परिवारजनों से अंतिम आशीर्वाद प्राप्त किया तो सभी की आंखों से अश्रुधारा बह चली। उसने सभी से मिच्छामि दुक्कडं कहा। दीक्षार्थी कुमारी कृति का उत्साह व उल्लास देखते ही बनता था। समारोह में 5 हजार से अधिक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति थी। विधि विधान की पूर्णता पर कुमारी कृति को नया नाम साध्वी कृतार्थप्रभाश्रीजी प्रदान करते हुए उन्हें पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या

पूज्य गुरुदेव अवंती तीर्थोद्धारक, खरतरगच्छाधिपति

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

(फाल्गुन सुदि 14)

के जन्म दिवस पर हार्दिक वंदनाएं... वर्धापना...

वंदनकर्त्ता

शा. मांगीलाल चिंतामनदास संकलेचा

मूलचन्द, रोहित, दीपक, भावना संकलेचा परिवार

बाडमेर

मो. 94145 29795

पूज्य गुरुदेव अवंती तीर्थोद्धारक, खरतरगच्छाधिपति

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

(फाल्गुन सुदि 14)

के जन्म दिवस पर हार्दिक वंदनाएं... वर्धापना...

वंदनकर्त्ता

धर्मेन्द्रकुमार सुरेन्द्रमलजी पटवा

ऋषभ ग्रेनाईट एक्सपोर्ट

जालोर

मो. 94141 52018

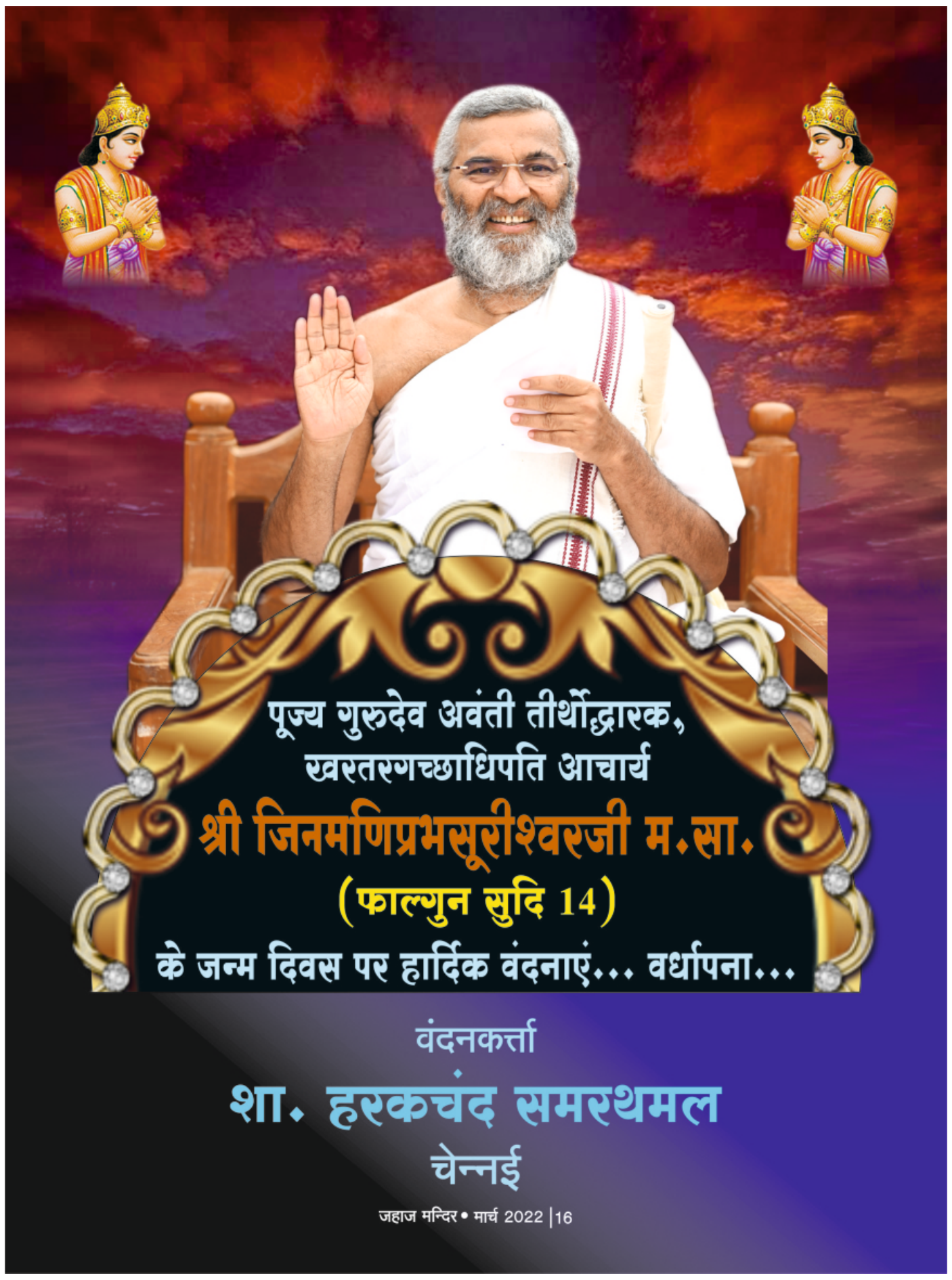

वंदनकर्त्ता

शा. हरकचंद समरथमल

चेन्नई

पूज्य गुरुदेव अवंती तीर्थोद्धारक, खरतरगच्छाधिपति

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

(फाल्गुन सुदि 14)

के जन्म दिवस पर हार्दिक वंदनाएं... वर्धापना...

वंदनकर्त्ता

पुष्पा A. जैन

(महामंत्री जहाज मन्दिर ट्रस्ट)

केतन-बिंदु जैन, चेतन-संगीता जैन

पाली-मुम्बई

पूज्य गुरुदेव अवंती तीर्थोद्धारक, खरतरगच्छाधिपति

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

(फाल्गुन सुदि 14)

के जन्म दिवस पर हार्दिक वंदनाएं... वर्धापना...

वंदनकर्त्ता

श्रीमती सुमटीदेवी वेलचंदजी गुलेच्छा

मोकलसर, जालोर, सुरत

मो. 97992 32057

सूरत पाल मध्ये दादा श्री जिनकुशलसूरि गुरुदेव की 689वीं पुण्यतिथि पर भक्ति

आयोजक-श्री कुशलवाटिका युवा मंडल

घोषित किया गया।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया- एक एम.बी.ए. पढी लिखी लाखों-करोडों का व्यापार करने वाली 27 वर्षीया कुमारी कृति की दीक्षा अपने आप में एक सुखद आश्चर्य है। यह वर्ष खरतरगच्छ के लिये किसी चमत्कार से कम नहीं है। इस एक वर्ष में खरतरगच्छ में 23 मुनि समेत कुल 56 दीक्षाऐं संपन्न हुई है, जो अपने आप में एक कीर्तिमान है।

उन्होंने कहा- गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. का पालीताना से गिरनार संघ के बाद इन्दौर की ओर विहार हो चुका था। परन्तु उनके स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण उनका विहार आदेश देकर स्थगित करना पडा। आज भले वे यहाँ नहीं है। पालीताना बिराजमान है। पर उनका हृदय... उनका रोम रोम... यहाँ पर है। उनकी प्रबल भावना थी कि इन्दौर मुझे पहुँचना है। पर उनके स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण मैंने मना करना उचित समझा।

उन्होंने कहा- गणिनी प्रवरा अत्यन्त उच्च कोटि के संयम की आराधना करते हैं। उनकी शिष्या होना कुमारी कृति का सौभाग्य है।

सुबह 6.30 बजे प्रारंभ हुआ यह दीक्षा समारोह 11.30 बजे पूर्ण हुआ। प्रारंभ से अंत तक श्रावकों की वैसी ही उपस्थिति बनी रही।

धर्ममाता-पिता बनने का लाभ श्री भैरूचंदजी मनोजजी ओस्तवाल परिवार ने लिया। जबकि उनके सांसारिक 3 भुआजी परिवार ने नामकरण का लाभ प्राप्त किया।

खरतरगच्छ में पदों की घोषणा

इन्दौर 21 फरवरी। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने इन्दौर नगर में भागवती दीक्षा महोत्सव के अवसर पर खरतरगच्छ में पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म.सा. के समुदाय में उपाध्याय आदि पदों की घोषणा की।

पूज्य अध्यात्म योगी मुनिराज श्री महेन्द्रसागरजी म., पूज्य युवा मनीषी मुनिराज श्री मनीषसागरजी म. पूज्य गणिवर्य श्री मनितप्रभसागरजी म. को उपाध्याय पद प्रदान किया जायेगा। पूज्य मुनिराज श्री मेहुलप्रभसागरजी म. को गणि पद से विभूषित किया जायेगा।

ये पद अनुकूलतानुसार आने वाले समय में शीघ्र ही समारोह पूर्वक अर्पण किये जायेंगे। इस घोषणा से सकल खरतरगच्छ श्री संघ में हर्ष व्याप्त हो गया।

हमारे नए संरक्षक

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ ट्रस्ट चित्तौड़गढ

श्री जीवराजजी सुमित्राजी खटोड़ चित्तौड़गढ़ राज.

चातुर्मास घोषणा

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने इन्दौर दीक्षा समारोह में विविध संघों की विनंती स्वीकार कर अपने समुदाय के साधु-साध्वियों के चातुर्मासों की घोषणा की। चातुर्मास इस प्रकार घोषित हुए।

पूज्य स्थविर मुक्तिप्रभसागरजी म. पू. गणि श्री मनीषप्रभसागरजी म. ठाणा 4	तिरूपातूर
पूज्य गणि श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा	नंदुरबार
पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा	चेन्नई (पुरुषवाक्कम)
पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा	मुंबई, तलोदा, मालेगांव
पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा	इचलकरंजी
पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा	खेतिया
पू. साध्वी श्री प्रियंवदाश्रीजी म. शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा	हैदराबाद (फीलखाना)
पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा	कोलकाता
पू. साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म. आदि ठाणा	फलोदी
पू. साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा	धोरीमन्ना
पू. साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म. आदि ठाणा	सूरत (शीतलवाडी)
पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा	झुंझुनू
पू. साध्वी श्री प्रियस्नेहांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा	अक्कलकुआं
पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा	अमलनेर
पू. साध्वी श्री श्रुतदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा	पाटण
पू. साध्वी श्री संयमज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा	पालीताना
पू. साध्वी श्री श्रद्धान्विताश्रीजी म. आदि ठाणा	चेन्नई (धर्मनाथ मंदिर)
पू. साध्वी श्री प्रशमिताश्रीजी म. आदि ठाणा	बालोतरा (बाडमेर संघ)
पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. आदि ठाणा	सूरत (कुशल दर्शन)

धोलका दादावाडी में यात्रिक भवन का उद्घाटन

धोलका 15 फरवरी। प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरिजी की जन्मस्थल धोलका कलिकुंड स्थित श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी का 10वां ध्वजा महोत्सव और नवनिर्मित यात्रिक भवन का उद्घाटन हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर अहमदाबाद, वडोदरा सहित अनेक गांवों के लोग उपस्थित थे। साथ ही पूजनीया साध्वी विनीतयशाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया साध्वी मुक्तांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की सानिध्यता रही।

इस अवसर पर विभिन्न लाभार्थियों ने नवनिर्मित हॉल, कमरे आदि का उद्घाटन किया।

जहाज मन्दिर की वर्षगांठ संपन्न

मांडवला 15 फरवरी 2022। पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म.सा. के समाधि स्थल जहाज मन्दिर मांड़वला स्थित श्री शान्तिनाथ प्रभु के जिनालय की 23वीं वर्षगांठ नूतन ध्वजारोहण उल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. व तरुण तपस्वी मुनि श्री नयज्ञसागर जी म.सा. की शुभ निश्रा में बाजेगाजे के साथ विजय मुहूर्त में मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण किया गया। इस पावन अवसर पर आसपास के अनेक श्रद्धालु गण उपस्थित रहे। साथ ही पूज्य गुरुदेव आचार्यदेवेश श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. के परम गुरुभक्त बालोतरा के माली समाज के अनेक सम्माननीय लोग भी पधारें।

माली समाज के भक्त लोगों का आचार्यदेवेश श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. के प्रति अटूट आस्था व श्रद्धा भाव है. पूज्य गुरुदेव श्री की प्रेरणा से माली समाज के कईं भक्त दुर्व्यसनों के त्याग के साथ रात्रिभोजन व जमीकन्द का भी त्याग किए हुए है।

रायपुर दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा 3 मार्च को

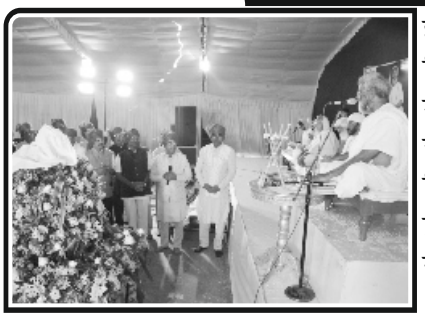

इन्दौर 21 फरवरी। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. ने दिनांक 21 फरवरी इंदौर में दीक्षा महोत्सव के अवसर पर श्री ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट रायपुर की विनंती पर एम. जी. रोड़ रायपुर में नवनिर्माणाधीन श्री धर्मनाथ जिनालय व श्री जिनकुशलसूरि जैन दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त 3 मार्च 2023 प्रदान किया। इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री विजय कांकरिया ने गुरुदेव से पावन निश्रा प्रदान करने व सन् 2023 के चातुर्मास की विनंती की।

रायपुर से ट्रस्ट मण्डल सहित बड़ी संख्या में श्रावक उपस्थित रहे। प्रतिष्ठा के मुहुर्त की उद्घोषणा से श्री संघ में जय-जयकार की ध्वनि की।

खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा की बैठक

इन्दौर 22 फरवरी। अ.भा.जैन श्वेताम्बर खरतरगछ प्रतिनिधि महासभा की कार्यकारिणी की बैठक पू. गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के सानिध्य में महावीर बाग, इंदौर में 22 फरवरी 2022 को संपन्न हुई। सभा में श्री मोहनचंदजी ढढा, अध्यक्ष सहित देश के विभिन्न राज्यों के सदस्यों को उपस्थिति रही।

बैठक की सन् 2020/21 के लेखा जोखा को पारित किया गया। कोविड महामारी के दौरान प्रारंभ की गई साधर्मिक सहयोग योजना को आगे बढ़ाने हेतु चर्चा के उपरांत निर्णय लिया गया कि खरतरगछ पेढ़ी के साथ मिलकर शिक्षा के क्षेत्र में जरुरतमंद विद्यार्थियों को सहयोग प्रदान हेतु योजना को लागू किया जाएगा।

-पदम कुमार टाटिया (महामंत्री)

तृतीय वर्षगांठ पर अवंती पार्श्वनाथ तीर्थ पर ध्वजारोहण

उज्जैन 15 फरवरी। दानी गेट उज्जैन स्थित प्राचीन श्री अवंती पार्श्वनाथ तीर्थ त्रिशिखरीय जिनालय की तृतीय वर्षगांठ महोत्सव पर पूज्य गुरुदेव अवंती तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा आदि ठाणा एवं यतिवर्य श्री वसंतविजयजी के सानिध्य में अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ पर ध्वजा फहराई गई। प्रारंभ में शोभाया शांतिनाथ मंदिर छोटा सराफा से निकली। शोभायात्रा में बैण्ड ऊँट हाथी पर लाभार्थी एवं महिला मंडल द्वारा कलश, समाज जनों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। वरघोड़ा दानीगेट श्री अवंति पार्श्वनाथ मंदिर पहुँचा। मंदिर में गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा की प्रेरणा से मुमुक्षु कु. कृति कोठारी एवं रवीना बोथरा का मंदिर ट्रस्ट द्वारा सम्मानपत्र देकर बहुमान किया गया एवं लाभार्थी एवं समाजजनों का बहुमान किया गया।

गुरुदेव ने अपने प्रवचन में कहा कि तीन वर्ष पश्चात आज वही माघ चतुर्दशी का वह दिन आया है। प्रतिष्ठा समय का जो माहौल तीर्थ में था वह पूरे भारत में प्रतिष्ठित है इसके लिये समाज जन, ट्रस्टी बधाई के पात्र है। मूलनायक अवंति पार्श्वनाथ के शिखर की ध्वजा आज बदली जा रही है उसी तरह व्यक्ति को अपने व्यवहार, दिनचर्या, हृदय को बदलना चाहिए। ध्वजा प्रतीकात्मक होती है इसी ही प्रेरणा से कु. कृति कोठारी एवं रवीना बोथरा दीक्षा के मार्ग में युवावस्था में आ गई है।यति श्री वसंतविजयजी ने भी प्रवचन दिया।

सत्तर भेदी पूजा के साथ श्री अवंती पार्श्वनाथ तीर्थ की मुख्य ध्वजा के लाभार्थी बेंगलुरु के संघवी कुशलराज उत्तमचंद ललित कुमार गुलेछा परिवार एवं चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर के कायमी ध्वजा के लाभार्थी हीरालाल कुमार विकास बड़गांव जिला कोल्हापुर तथा आदेश्वर प्रभु के शिखर पर कायमी ध्वजा के लाभार्थी मांगीलाल जितेंद्र मनीष मालू परिवार सूरत ने ध्वजा लगाकर पुण्य लाभ लिया। इस अवसर पर विधायक पारस जैन, सुप्रसिद्ध संगीतकार नरेन्द्र भाई वाणीगोता एवं समाजजन विशिष्ट रूप से उपस्थित थे।

-अशोक कुमार कोठारी

दुर्ग में प्रतिष्ठा 18 फरवरी को

इन्दौर 21 फरवरी। श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, दुर्ग के ट्रस्टी एवं बडी संख्या में सदस्यों के साथ इन्दौर में पूज्य गच्छाधिपति श्री के सानिध्य में उपस्थित हुए। संघ के अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी दुगड ने भावभरी विनंती करते हुए कहा कि दुर्ग सदर बाजार स्थित मुख्य जिनालय की जीर्णोद्धार का कार्य प्रगति पर है। उस जिनालय की प्रतिष्ठा का मंगल मुहूर्त एवं निश्रा प्रदान करने की स्वीकृति दिरावें। पूज्य श्री ने उनकी विनंती स्वीकार करते हुए फाल्गुन वदि त्रयोदशी दि. 18 फरवरी 2023 का शुभ मुहूर्त प्रदान किया। मुहूर्त की उद्घोषणा करते ही पूरी सभा में जयघोष का वातावरण बना।

बालोतरा में श्री खरतरगच्छ भवन का उद्घाटन

बालोतरा 5 फरवरी। श्री बाड़मेर जैन खरतरगच्छ दादा श्री जिनकुशलसूरि ट्रस्ट बालोतरा के तत्त्वावधान में एवं पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा से नूतन निर्मित श्री खरतरगच्छ भवन का उद्घाटन समारोह के साथ संपन्न हुआ।

इस नूतन और भव्य भवन का मुख्य लाभ वर्तमान में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री किशनलालजी खेतमलजी पारख परिवार ने अपने सद्द्रव्य का सदुपयोग कर लिया है। भवन का उद्घाटन पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा., मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. एवं तपागच्छीय मुनि शीतलचन्द्रसागरजी म. ठाणा-2 एवं श्री खरतरगच्छीया पू. साध्वी जयरत्नाश्रीजी म. ठाणा-3 की पावन निश्रा में धूमधाम से दि. 5.2.2022. को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बालोतरा के सभी सम्प्रदाय के अग्रणी सम्माननीय लोग उपस्थित रहे। तथा पूज्य गुरुदेव के परम भक्त माली समाज के सभी अग्रणी लोग भी उपस्थित रहे।

सुबह 11 बजे श्री खरतरगच्छ संघ द्वारा भव्य वरघोड़ा निकाला गया। पूज्य आचार्यदेवेश के साथ चतुर्विध संघ सैकड़ों के तादाद श्रद्धालु गण जयकारा करते हुए चल रहे थे। वरघोड़ा मे बैंड बाजा ढोल नगाड़े बज रहे थे। बालोतरा के प्रमुख मार्गों से होते हुए गांधीपुरा नवकार कॉलोनी स्थित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय पहुंचकर देवदर्शन कर विजय मुहूर्त में पारख परिवार द्वारा भवन का उद्घाटन किया गया। फिर लाभार्थी परिवार का श्री बाड़मेर खरतरगच्छ संघ द्वारा बहुमान किया गया।

महावीर वाटिका में भगवान महावीर जिनालय की प्राण प्रतिष्ठा 8 मई को

बाड़मेर 5 फरवरी। नागाणाराय नगर लंगेरा रोड़ स्थित श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक ओसवाल श्री संघ के द्वारा निर्माणाधीन महावीर वाटिका में भगवान श्री महावीर जिनालय की अंजनशलाका प्राण प्रतिष्ठा 8 मई को आयोजित होगी। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. को श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक ओसवाल श्री संघ बाड़मेर द्वारा प्रतिष्ठा के मुहूर्त व निश्रा प्रदान करने के लिए विनती की गई। इस विनती को स्वीकार करते हुए गच्छाधिपति द्वारा आगामी 08 मई 2022 का शुभ मुहूर्त प्रदान किया। प्रतिष्ठा मुहूर्त की घोषणा होते ही पूरा परिसर जयघोष के साथ आनंदमय हो गया। आचार्य श्री ने प्रतिष्ठा में निश्रा प्रदान करने की अनुमति प्रदान की।

जैन श्री संघ की बैठक में वडेरा बने संयोजक। प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर जैन श्री संघ की बैठक शुक्रवार को जैन न्याति नोहरे में आयोजित की गई। जिसमें वर्तमान जैन श्री संघ के अध्यक्ष प्रकाशचंद वडेरा को सर्वसम्मति से भगवान महावीर प्रतिष्ठा महोत्सव समिति का संयोजक मनोनीत किया गया। इस बैठक में जैन श्री संघ के पदाधिकारी व ट्रस्टी उपस्थित थे।

चोरडिया परिवार के गृह मंदिर में प्रतिष्ठा संपन्न

इन्दौर निवासी श्री विजयेन्द्रजी सौ. सुधाजी सुपुत्र हिमांशु पीयूष चौरडिया परिवार के गृह मंदिर में परमात्मा आदिनाथ प्रभु की सपरिकर प्रतिमा की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव अर्वांति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में संपन्न हुई। यह प्रतिष्ठा वि.सं. 2078 फाल्गुन वदि 2 ता. 18 फरवरी 2022 को शुभ मुहूर्त्त में संपन्न हुई।

संगमरमर की शुभ्र धवल देवकुलिका में स्फटिक रत्न से निर्मित परमात्मा की प्रतिमा को स्फटिक रत्न से ही निर्मित परिकर में प्रतिष्ठित किया गया। इस अवसर पर पूज्य आचार्य श्री दिव्यानंदसूरिजी म. ने भी सानिध्यता प्रदान की।

विधिविधान विधिकारक श्री अरविन्दजी चौरडिया ने करवाया। इस मंदिर के निर्माण व व्यवस्थापन में कल्याण मित्र श्री पंकज भाई मुंबई का पूरा योगदान रहा। प्रतिष्ठा के बाद पूज्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। पूज्यश्री ने प्रभु पूजा की महिमा समझाई।

महावीर बाग, इन्दौर के बढ़ते कदम

श्री जैन श्वेतांबर नया मंदिर ट्रस्ट इन्दौर की सुपसिद्ध संस्था है। यह ट्रस्ट अनेक प्रकार की सामाजिक, धार्मिक गतिविधियों का संचालन महावीर बाग परिसर से संचालित करता आया है। इनमें मुख्य रूप से नियमित स्वास्थ सुविधाएं, धार्मिक पाठशाला, स्वाध्याय, पारिवारिक एवम वैवाहिक कार्यक्रम हेतु जैन समाज के लोगों के लिए परिसर की उपलब्धता, सामाजिक उठावना, चातुर्मास इत्यादि गतिविधियां शामिल है।

इसी क्रम में ट्रस्ट अपनी वर्तमान गतिविधियों में एक और महत्त्वपूर्ण गतिविधि 'यात्री आवास भवन एवं नियमित भोजनशाला' के संचालन की शुरुआत करने जा रहा है। इस नई विस्तारित एवं वर्तमान गतिविधियों के कुशल संचालन के लिए महावीर बाग परिसर में नए स्थान पर कार्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया गया।

इस शुभ अवसर पर गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. ने कार्यालय में पधार कर वासक्षेप प्रदान कर ट्रस्ट को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए संघ सेवा में और अधिक जुडने की प्रेरणा दी।

भोजनशाला का शुभारंभ स्व. श्री टोडरमलजी बादल देवी कटारिया परिवार के करकमलों द्वारा दिनांक 23.02.2022 बुधवार को सभी सदस्यों की उपस्थिति में किया गया।

छत्तीसगढ में दीक्षाओं की लहर

नयापारा 5 फरवरी। पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल साधु-साध्वी मंडल की निश्रा में मुमुक्षु हिमांशी सुराणा एवं मुमुक्षु मुक्ता डाकलिया की भागवती दीक्षा दि. 5 फरवरी को नवापारा में हर्षोल्लास पूर्वक सुसंपन्न हुई। दोनों मुमुक्षु बहिनों का नूतन नाम क्रमशः पू. साध्वी प्रवज्याश्रीजी म. एवं पू. साध्वी प्रभावनाश्रीजी म. घोषित किया गया। दीक्षा में अनेक नगरों के गुरुभक्तों भाग लिया।

महासमुंद 10 फरवरी। पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल साधु-साध्वी मंडल की निश्रा में दि. 10 फरवरी को 4 दीक्षा हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई। नूतन मुनि भगवंतों के नाम श्री विजयजी कोठारी का पू. मुनि श्री सन्मार्गरत्नसागरजी म., श्री रजतजी चोपड़ा का पू. मुनि श्री शाश्वतरत्नसागरजी म., श्री संयमजी पारख का पू. मुनि श्री श्लोकरत्नसागरजी म.सा. एवं श्रीमती सुषमाजी कोठारी का नया नाम पू. साध्वी प्रियसुधाश्रीजी म. उद्घोषित किया गया। दीक्षाओं के ऐसे अद्भुत माहौल से पूरा भारत हर्षित है।

अमेरिका की 40 युनिवर्सिटीज में शुरु होंगे स्पेशल कोर्स

वॉशिंगटन। अमेरिका की 40 यूनिवर्सिटीज ने जैन धर्म दर्शन और शाकाहार को पढ़ाने का फैसला किया है। इस पर 450 करोड़ रुपये खर्च होंगे। भारत में कहावत है कि जैसा अन्न खाओगे, वैसे हो जाओगे। यानी कि अन्न की प्रकृति किसी इंसान की मानसिक स्थिति को प्रभावित करती है. कई सारी मास शूटिंग देख चुका अमेरिका भी इस उक्ति को समझ गया है और अब मांसाहार छोड़कर धीरे-धीरे शाकाहार की ओर कन्वर्ट हो रहा है।

अमेरिका में बढ़ रही शाकाहारियों की संख्या

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका में शाकाहार खाने वाले लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इसकी वजह ये है कि लगातार मांसाहार खाने से लोगों में पेट की गड़बड़ी और हिंसात्मक स्वभाव में वृद्धि हो रही है। वहां पर पिछले साल मास शूटिंग की 693 घटनाएं हुईं, जिसमें कई लोग मारे गए। जो लोग मास शूटिंग में शामिल पाए गए, वे सब मांसाहार करने वाले थे। इसके चलते अब वहां के लोगों में अहिंसा और शाकाहार की लहर तेजी पकड़ रही है।

अमेरिका की 40 यूनिवर्सिटीज में जैन धर्म पर कोर्स

इसे आप ऐसे समझ सकते हैं कि अमेरिका की 40 यूनिवर्सिटीज में अब जैन धर्म पर पीएचडी कोर्स शुरू किया जा रहा है। साथ ही अहिंसा और सात्विक आहार पर भी डिप्लोमा कोर्स शुरू किए जाने की प्लानिंग हो रही है। अमेरिका-कनाडा में जैन धर्म के लोगों की सबसे बड़ी संस्था जैन एसोसिएशन नॉर्थ अमेरिका ने इसके लिए यूनिवर्सिटीज को प्रस्ताव दिया था, जिस पर उनकी ओर से सहमति जता दी गई है। संस्था के अध्यक्ष डॉ. सुलेख जैन ने बताया कि हाल में वीगन यानी शाकाहारी और नॉन वायलेंस जैसे शब्दों का अमेरिका में प्रचलन बढ़ा है। इससे पता लग रहा है कि अमेरिका के लोग अब हिंसा और मांसाहार को छोड़ देना चाहते हैं।

नए कोर्सेज पर आएगा 450 करोड़ रुपये का खर्च

उन्होंने कहा कि जैन धर्म पिछले कई हजार वर्षों से इन बातों को कहता रहा है। इसलिए अब वक्त आ गया है कि दुनिया जैन धर्म के इन सिद्धांतों के बारे में जाने और उन्हें अपने जीवन में लागू करे। यूनिवर्सिटीज में पढ़ाए जाने वाले इन कोर्सेज में 450 करोड़ रुपये का खर्च आएगा।

अमेरिका-कनाडा में रहते हैं 1.5 लाख लोग

डॉ. सुलेख जैन के अनुसार अमेरिका और कनाडा में जैन समाज के 1.5 लाख लोग रहते हैं। यह संस्था उन सबका उत्तर अमेरिका में प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने बताया कि अब यह संस्था अब 40 यूनिवर्सिटीज में शुरू होने वाले नए पाठ्यक्रमों के लिए सिलेबस तैयार कर रही है।

साबला में अवंती तीर्थोद्धारकश्री का प्रवास

साबला 1 मार्च। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी महाराज साहब गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी महाराज विहार करके दि. 1 मार्च को साबला पधारे।

साबला में पहाडी पर अवस्थित 700 साल पुरानी मणिधारी जिनचंद्रसूरिजी महाराज की दादावाड़ी है। वहां दर्शन किये।

अहमदाबाद में पूजा का आयोजन

अहमदाबाद 2 मार्च। खरतरगच्छ महिला परिषद शाखा अहमदाबाद शाहीबाग की कुशल वाटिका में पू. साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पू. साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में तृतीय दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी की 689वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष में दादा गुरुदेव की पूजा पढ़ाई गई।

केएमपी अहमदाबाद शाखा-2 का गठन

अहमदाबाद पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से व सज्जनमणि प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की सुशिष्या पू. साध्वी सम्यगदर्शनाश्रीजी म. के मार्गदर्शन में सुलोचनशिशु पूज्या साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. की निश्रा में खरतरगच्छ महिला परिषद अहमदाबाद शाखा-2 का विधिवत गठन हुआ। पदाधिकारियों का चुनाव समयानुकूल किया जाएगा। सभी को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

केयुप अहमदाबद की नई कार्यकारिणी गठित

अहमदाबाद 20 फरवरी। पूज्य अवंती तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से दि. 20 फरवरी को दादा साहेब ना पगला नवरंगपुरा में पूज्या साध्वी सुरंजनाश्रीजी म., पूज्या साध्वी कल्पलताश्रीजी म., पूज्या साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म., पूज्य साध्वी नीलांजनाश्रीजी म. के पावन सानिध्य में केयुप अहमदाबाद की मीटिंग रखी गई।

जिसमें संघ के गणमान्य वंशराजजी भंसाली, रतनलालजी हालावाला, दीपचंदजी बाफना, भंवरलालजी मंडोवरा, बाबूलालजी लूणिया, अशोकजी भंसाली, कुशलराजजी भंसाली, रमेशजी मालू, शांतिलालजी लुणिया, बाबूलालजी तातेड़ की उपस्थिति में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद अहमदाबाद शाखा के अध्यक्ष पद पर नरपतजी लुणिया को सर्व सहमति से मनोनीत किया गया।

संरक्षक के रूप में अशोकजी बाफना और रतनलाल जी बोथरा को बनाया गया। तत्पश्चात युवा परिषद की कार्यकारिणी बनाई गई जिसमें उपाध्यक्ष हितेशजी हालावाला, नरेशजी मंडोवरा को मनोनीत किया गया। सचिव मनीषजी गोलेछा, सह सचिव कमलेशजी लुणिया, राणमलजी तातेड़, कोषाध्यक्ष प्रकाशजी चोपड़ा, सह कोषाध्यक्ष कुमारपालजी गोलेछा, प्रचार एवं प्रसार मंत्री सुनीलजी सकलेचा एवं कल्पेशजी लुणिया, वैयावच्च एवं विहार संयोजक संदीपजी डोसी एवं जिनेशजी मेहता, प्रोग्राम कमेटी में अंकितजी बोहरा एवं महावीर वडेरा, अस्पताल संबंधित कमेटी में मुकेशजी बोकड़िया, जितेंद्रजी बोथरा, घिसूलालजी कवाड़, राजेशजी मंडोवरा, अतिथि एवं सत्कार कमेटी वगतावरमलजी बाफना, विजय भाई शाह, मयूरजी लालन, रोमिलजी गोलेछा, व्यक्ति एवं विकास कमेटी संदीपजी बोथरा एवं महावीरजी लालन, नवरंगपुरा एरिया के संयोजक मोहितजी मालू, चांदखेड़ा एरिया के संयोजक मयंकजी झाबक, मोटेरा एरिया के संयोजक

आदिनाथ जैन ट्रस्ट चैन्नई का जैनोलोजी कोर्स

चैन्नई 20 फरवरी। आदिनाथ जैन ट्रस्ट द्वारा संचालित आल इंडिया जैनोलोजी कोर्स की परीक्षा दि. 20.02.2022 को 120 केन्द्रों में आयोजित की गयी। डॉ. निर्मला जैन के मार्गदर्शन पर यह जैनोलोजी कोर्स तैयार किया गया हैं। चैन्नई में यह परीक्षा चूलै, वेपेरी, अन्नानगर, मयलापुर, कोर्रुक्खपेट, पेरंबूर सहित कई केन्द्रों में हुई। इस परीक्षा में ऑल इंडिया से 2600 विद्यार्थियों एवं साधु-साध्वीजी ने अलग अलग केन्द्रों से हिस्सा लिया। जिन विद्यार्थियों ने किसी कारणवश इस परीक्षा में भाग नहीं लिया उनकी परीक्षा दि. 24 फरवरी को होगी।

इस जैनोलोजी कोर्स में तीन अलग-अलग कोर्स के परीक्षा होती हैं। पहला 'डिप्लोमा इन जैनोलोजी' त्रिवर्षीय कोर्स, दूसरा 'डिप्लोमा इन तत्त्वज्ञान' एकवर्षीय कोर्स, तीसरा 'डिप्लोमा इन जैन विद्या' (जीव विचार, नव-तत्त्व, दण्डक, लघु संग्रहणी, चैत्यवंदन भाष्य, प्रत्याख्यान भाष्य), चौथा कोर्स 'डिप्लोमा इन जैन कर्म विज्ञान' त्रिवर्षीय कोर्स (कर्म ग्रन्थ)।

यह कोर्स भविष्य में आत्मा को परमात्मा एवं वर्तमान में सुखी बनाने वाला हैं। यह तत्त्व मीमांसा, आचार मीमांसा एवं कर्म मीमांसा से युक्त हैं। इसी में तीर्थंकर चारित्र, काल चक्र, मानव जीवन की दुर्लभता, 12 व्रत, ध्यान, योग, लेश्या, आगमों की झलक, आहार विज्ञान आदि अनेक विषयों से युक्त हैं। इस कोर्स की परीक्षा प्रतिवर्ष फरवरी और जुलाई मास में होती हैं। परीक्षा के पूर्व प्रमुख क्षेत्रों में शिविर का भी आयोजन किया जाता हैं। कोर्स का शुल्क मात्र 250 प्रति सेमेस्टर हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे आदिनाथ जैन ट्रस्ट- 044-43807077

सादर श्रद्धांजलि

श्री रामलालजी मालू डाकोर

नवकार महामंत्र के विशिष्ट आराधक श्री रामलालजी राणामलजी मालू (डाकोर वाले) का जोधपुर में निधन हो गया।

मूल सियाणी वर्तमान में डाकोर प्रवासी श्री रामलालजी मालू के व्यक्तित्व के बारे में लिखना असंभव है। डाकोर में जिनालय निर्माण, धर्मशाला भोजनशाला दादावाडी निर्माण आपके सुदीर्घ सत्प्रयासों का परिणाम है। गुजरात मध्यप्रदेश के विहार क्षेत्र में डाकोर गांव में साधु-साध्वीजी का विचरण आठ महिनों तक निरंतर रहता है। ऐसे स्थान पर रहकर वैयावच्च एवं संपूर्ण संकुल के निर्माण में सहभागी बने। उन्होंने अपने जीवन में तीर्थ-स्पर्शना, लोच, तपस्या आदि अनेक आराधनाएं की है।

पूज्य अवंती तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति श्री के प्रति आपकी विशेष आस्था थी। जहाज मंदिर परिवार की ओर से आपकी पावन आत्मा को सादर श्रद्धांजलि समर्पित है।

रितेशजी गोलेछा, ओढव एरिया के संयोजक मुकेशजी छाजेड़, सेंट्रल कमेटी के लिए जगदीशजी बोथरा एवं कांतिलालजी हुंडिया का चयन किया गया। समस्त पदाधिकारी को सर्व सहमति से मनोनीत किया गया।

पूरे कार्यक्रम का मंच संचालन श्री मनीषजी गोलेछा ने किया। मीटिंग के पश्चात स्वामी वात्सल्य का लाभ श्रीमान रतनलालजी बोथरा एवं श्री मनीषजी गोलेछा ने लिया।

अहमदाबाद में शिबीर

अहमदाबाद 26 फरवरी। धर्म नगरी अहमदाबाद में पंच दिवसीय शिबीर का आयोजन पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म. एवं पू. साध्वी हेमरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में हुआ।

महिलाओं के लिए 22 से 26/2 तक हर रोज भिन्न विषय की शिबीर रखी गई। धर्म ही हमारा स्वाभाव, जैनों की क्या पहचान, सुपात्र दान मोक्ष का द्वार, समायिक मोक्ष का सोपान, ज्ञान की वृद्धि कैसे हो, तीर्थंकरो का जीवन सौन्दर्य आदि सभी विषयों की 70 अंक की परीक्षा ली गई। जिसमें अनेक महिलाओं ने भाग लिया। सभी महिलाओं ने सुसंस्कारों का सिंचन खुद के जीवन में भी हो ऐसा भाव व्यक्त किया।

परीक्षा में विनीता मालू, पूजा छाजेड, वनिता मालू, हिमांशी जैन, वैशाली वडेरा, सुरेखा तातेड आदि ने प्रमुख स्थान प्राप्त किया। गुरुवंदन भाष्य की परीक्षा में सोनम मालू ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। हर रविवार बच्चों की शिबीर का आयोजन किया जा रहा है। इसी तरह युवाओं हेतु भी शिबीर हुआ। शिबीर का संचालन पू. साध्वी चारुलताश्रीजी म. व पू. चारित्रप्रियाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल ने किया।

शिबीर की सफलता में केयुप अहमदाबाद के अध्यक्ष श्री नरपतजी लूणिया, केएमपी राष्ट्रीय प्रचार प्रसार अध्यक्ष मंजूजी मेहता एवं बालिका परिषद अहमदाबाद की कु. किंजल लूणीया ने अनुमोदनीय पुरुषार्थ किया।

कुशल वाटिका की नवमी वर्षगांठ

बाड़मेर 03 फरवरी। राष्टीय राजमार्ग-68 बाडमेर अहमदाबाद रोड पर स्थित कुशल वाटिका प्रांगण में भगवान मुनिसुव्रतस्वामी जिनमन्दिर, दादावाड़ी, नवग्रह मन्दिर, देवी-देव मन्दिर, एवं गुरु मन्दिर की नवमीं वर्षगांठ दि. 3 फरवरी को सम्पन्न हुई।

पू. प्रवर्तिनी प्रमोदश्री जी म.सा. की स्मृति में बनी कुशल वाटिका के नौ मन्दिरों की नवमीं वर्षगांठ पर पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती पूज्या महत्तरा श्री चम्पाश्रीजी म. सा. की सुशिष्या गच्छगणिनी सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूज्या साध्वी अमितगुणाश्रीजी म. व साध्वी श्रेयनंदिताश्रीजी म. की निश्रा में प्रात: 7 बजे से सतरह भेदी पूजा, प्रात: 8.00 बजे ब्रह्म मुहूर्त में शिखर पर लाभार्थी परिवारों द्वारा ओम् पुण्याहं के मन्त्रोच्चार के साथ ध्वजारोहण किया गया।

मूलनायक श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान की ध्वजा श्री भंवरलाल विरधीचन्द छाजेड परिवार हरसाणी वालो की ओर से चढाई गई। इस कार्यक्रम में सैकड़ों श्रद्वालुओं के साथ सकल संघ साक्षी रहा। कार्यक्रम के बाद कुशल वाटिका ट्रस्ट द्वारा लड्डू की प्रभावना की गयी। वर्षगांठ में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद केयुप, अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला व बालिका परिषद केएमपी व केबीपी, कुशल वाटिका मित्र मण्डल, गिरनार भक्त मण्डल, पार्श्व मण्डल सहित अनुकरणीय सेवा देने वाले मण्डलों व संस्थाओं का ट्रस्ट मण्डल द्वारा आभार व्यक्त किया गया। वर्षगांठ के उपलक्ष में मन्दिरों को रंगीन रोशनी व फूलों द्वारा सजाया गया। वर्षगांठ कार्यक्रम में आस-पास के क्षेत्रों से सैकड़ों गुरुभक्तों ने भाग लिया।

प्रेषक- कपिल मालू

पूज्य गच्छाधिपति श्री का विहार कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. ठाणा ने इन्दौर दीक्षा की संपन्नता के पश्चात् देपालपुर की ओर विहार किया। वहाँ श्री संघ द्वारा भव्य सामैया किया गया। पूज्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। यह ज्ञातव्य है कि तीन वर्ष पूर्व देपालपुर में दादावाडी की प्रतिष्ठा पूज्य आचार्यश्री के सानिध्य में संपन्न हुई थी।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री बडनगर होते हुए रतलाम पधारे। खरतरगच्छ श्री संघ द्वारा भव्य सामैया किया गया। पूज्यश्री के प्रवचन के पश्चात् स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। श्री संघ ने चातुर्मास की भावभरी विनंती की।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री बांसवाडा, साबला होते हुए पूज्यश्री गजमंदिर केशरियाजी पधारेंगे। जहाँ गज मंदिर में उनकी निश्रा में ता. 6 मार्च 2022 को आदिनाथ प्रभु, पुण्डरीकस्वामी की प्रतिमा की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी। ये प्रतिमाऐं नवनिर्मित देवकुलिकाओं में प्रतिष्ठित की जायेगी।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री उदयपुर पधारेंगे। जहाँ उनकी निश्रा में सूरजपोल दादावाडी में नवनिर्मित भवन का उद्घाटन ता. 13 मार्च को होगा।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री दुठारिया होते हुए जहाज मंदिर पधारेंगे। वहाँ कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् पूज्यश्री धोरीमन्ना पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में कुमारी रविना बोथरा की दीक्षा ता. 27 अप्रेल को संपन्न होगी। वहाँ से पूज्यश्री बाडमेर पधारेंगे, जहाँ ता. 3 मई को कुशल वाटिका में वर्षीतप के पारणे संपन्न होंगे। साथ ही ता. 8 मई को जैन श्री संघ बाडमेर द्वारा नवनिर्मित श्री पार्श्वनाथ मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहाँ से विहार कर पूज्यश्री फलोदी पधारेंगे, जहाँ जीर्णोद्धारकृत श्री नेमिनाथ मंदिर की प्रतिष्ठा ता. 1 जून को संपन्न होगी। वहाँ से पूज्यश्री जयपुर की ओर विहार करेंगे।

संपर्क- मुकेश- 9825105823 (वॉट्सप)

नवनिर्मित तीर्थों व दादाबाड़ी के दर्शनार्थ पधारिये

श्री विक्रमपुर (राज.)

द्वितीय दादा गुरूदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी की जन्मस्थली विक्रमपुर (हाल में बीकमपुर) में नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय तथा मणिधारी दादाबाड़ी के दर्शन पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के अलग उपाश्रय तथा अतिथिगृह जिसमें एअरकंडीशनर व फर्नीचरयुक्त कमरे, डोरमेट्री की सुविधा प्राप्त है तथा यह फलोदी से 75 किमी. तथा बीकानेर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह जैसलमेर, फलोदी, बीकानेर हाइवे पर बाप से 45 किमी. पर स्थित है।

Administrotor
Shri Dharmendra Khajanchi
Bikaner (Raj.) Mo.: 9413211739

मुनीम श्री प्रशान्त शर्मा, श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी,
बीकमपुर (विक्रमपुर)- 334305 (जि. बीकानेर-राज.)
मो. 9571353635, 9001426345-पेढ़ी

श्री खेतासर (राज.)

चतुर्थ दादागुरूदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचंद्रसूरिजी की जन्म स्थली खेतासर में नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय तथा चतुर्थ गुरूदेव की दादाबाड़ी के दर्शन-वंदन व पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के उपाश्रय तथा अतिथिगृह फर्निचरयुक्त कमरे की सुविधा प्राप्त है। यहाँ भोजनशाला की सुविधा है मगर हर रोज भोजनशाला चालू नहीं है। यहाँ पधारने के लिये जोधपुर, ओसिया, तिंवरी से बस सर्विस चालू है। यह स्थान ओसियां तीर्थ से 10 किमी. तथा जोधपुर से 65 किमी. पर हैं।

Administrotor श्री बाबूलालजी टाटिया
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 9928217531

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 74250062227

श्री सिद्धपुर पाटन (गुज.)

खरतरगच्छ की जन्मस्थली पाटन नगर में सहस्राब्दी वर्ष के उपलक्ष में भवन का निर्माण किया गया है। यहां पर साधु-साध्वी भगवतों के रूकने, स्वाध्याय व पठन-पाठन के लिए सुविधायुक्त भवन है। कृपया जब भी साधु-साध्वी भगवंत पाटन पधारे तो इस सुविधा का उपयोग जरूर करें।

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी, पाटन (गुज.)

Ex. Trustee: **Shri Deepchandji Bafna**
Ahmedabad (Guj.) Mo. 9825006235

श्री राकेश भाई मो. 9824724027

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर 50 हजार रूपये लेकर जुआ घर पहुँचा। लगातार खेलने लगा। हार-जीत चल रही थी। कभी वह जीतता, कभी हारता। एक बार तो उसकी सारी जेबें भर गई। कई बाजियाँ जीत कर उसने अपनी पूंजी को दुगुना कर दिया था।

उसकी पत्नी साथ ही थी। उसने कहा- बस... बहुत हो गया। अब बंद करो। पर उसके दिल दिमाग में लोभ छा गया। उसने देखा- मैं लगातार जीत रहा हूँ। अभी लाख रूपये हैं। थोडा और खेलूंगा तो दो लाख हो जायेंगे। वह जीत के सपने देखने लगा... कल्पनाओं के सपने बुनने लगा।

बाद में वह लगातार हारता चला गया। किस्मत उसका साथ नहीं दे रही थी। पत्नी ने कहा- अब रहने दो। जो गया वो गया। जो बचा वो अपना है। बंद करो यह जुआ और चलो घर।

पर वह तैयार नहीं हुआ। उसका मन हारे हुए रुपये वापस जीतना चाहता था। वह सोच रहा था कि अगली बाजी मेरी होगी। हारा हुआ सारा धन वापस जीत लूंगा। पर वह लगातार हारता जा रहा था।

घंटे भर बाद जब उसने अपनी जेब टटोली तो देखा उसके केवल 20 रूपये रह गये थे। उसने पत्नी की ओर देखा। पत्नी उदास थी।

जटाशंकर ने पूछा- अब सिर्फ 20 रूपये हैं। तुम कहती हो तो दांव लगा देता हूँ।

पत्नी परेशान थी। अब 20 रूपये के लिये क्या मना करना!

उसका मन भारी हो गया था। वह उठी और अपने घर की ओर प्रस्थान करते हुए कहा- मैंने जब कहा था तब मेरी बात मानी नहीं। और अब केवल 20 रुपये बचे हैं तो मुझसे पूछने का नाटक करते हो। तुम्हें दांव पर लगाना हो तो लगा दो।

उसने 20 रूपये से खेलना प्रारंभ किया। इस बार किस्मत ने साथ दिया। वह जीतता जा रहा था... जीतता जा रहा था...। लोभ बढ़ता ही गया। फिर अचानक मोड़ आया। वह हारता गया... हारता गया...।

जेब पूरी खाली हो गई। कुछ नहीं बचा। घर पहुँचने के लिये टेक्सी का किराया तक उसके पास नहीं था। पैदल चल कर घर पहुँचा।

घर पर पत्नी ने पूछा- क्या हुआ! जीते या हारे।

वह बोला- हारा।

कितना हारा!

वह बोला- बीस रुपये।

पत्नी बोली- तुम तो पचास हजार लेकर गये थे! बीस कैसे हारे! पूरे ही हारे हो ना।

वह बोला- वो तो पहले हार गया था। शास्त्रकार कहते हैं- बीती ताहि विसारि दे। जो बीत गया, उसे भूल जाओ। बाद में तो बीस रूपये ही हारा।

उसे पचास हजार की हार नजर नहीं आ रही थी। इस कारण वह दुखी भी नहीं था। क्योंकि वह यही मान रहा था कि मैं केवल बीस रूपये ही हारा हूँ।

पर ऐसी मान्यता से उसके नुकसान की भरपाई नहीं हो सकती।

हम जब एक मनुष्य भव हारते हैं तो केवल एक भव नहीं हारते, अनंत जन्म हार जाते हैं। जो व्यक्ति पूर्व हार के कारण उदास हो जाता है। वह व्यक्ति फिर दुबारा हारने के लिये कभी भी तत्पर नहीं होता।

अपने पूर्व समय को व्यर्थ में खोकर हारने का पश्चात्ताप करने वाला व्यक्ति अपने वर्तमान समय को कभी नहीं खोता।

विभिन्न कार्यक्रम की झलकियाँ

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2021-2023 Date of Posting 7th

परमात्मा महावीर की देशना भूमि

अनंत लब्धि निधान प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामी की केवलज्ञान भूमि

श्री गुणायाजी तीर्थ का आमूलचूल जीर्णोद्धार

पूज्य गुरुदेव अर्वांति तीर्थोद्धारक
गच्छाधिपति आचार्य प्रवर
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

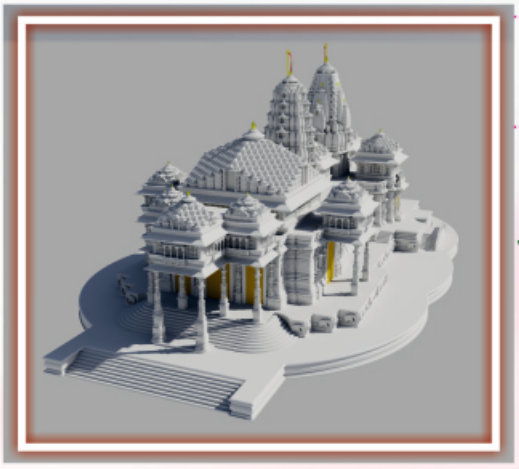

शिलान्यास समारोह

ज्येष्ठ वदि 10, गुरुवार, दिनांक 25 मई 2022, प्रात: 9 बजे

पूर्व भारत के इस अतिप्राचीन महान् तीर्थ के शास्त्रशुद्ध
सुविहित जीर्णोद्धार में लाभ लेने का पुण्यशाली अवसर!
इस पावन अवसर पर
सकल श्री संघ से पधारने का हार्दिक निवेदन है।

निवेदक

श्री गुणायाजी तीर्थ जीर्णोद्धार समिति
श्री जैन श्वेताम्बर भंडार तीर्थ, पावापुरी तीर्थ

सुरेन्द्रकुमारसिंह पारसान, कोलकाता
अध्यक्ष

संघवी तेजराज गुलेच्छा, बैंगलोर
संघवी रमेश मुथा, चैन्नई
महावीरचंद लूंकड मेहता, बैंगलोर
संयोजक

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फैक्स : 02973-256040, फोन : 096496 40451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408